Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2019 SHISRRJ | Volume 2 | Issue 4 | ISSN : 2581- 6306

आवरण अभिकल्पना (डिज़ाइन) में फोटोग्राफी की भूमिका और उपयोगिता

Pavanesh Kumar Bind,
Graphic Designer, Design Innovation Centre,
Indian Institute of Technology, Banaras Hindu University (IIT-BHU)
Former Lecturer (Applied Arts), Awadhoot Bhagwan Ram Post Graduate College,
Anpara, Sonbhadra, Uttar Pradesh, India.

सारांश- 'कवर' मुख्यत: सभी पृष्ठों या सभी मुख्य बातों, विचारों, संदेशों आदि की एक झलक होता है। आवरण द्वारा शीर्षक में समाहित सार या अन्दर के सभी विषयों को प्रमुखता के साथ दिखाया व दर्शाया जाता है। डिज़ाइन के सभी तत्वों को बहुत ही कुशलतापूर्वक संयोजित कर सृजित किया जाता है जिसके फलस्वरूप वह अपने लक्ष्य एवं उद्देश्य को पाठक या दर्शक तक सफलता पूर्वक प्रेषित कर सके। आवरण/मुख्य पृष्ठ पर प्रकाश डालें तो इतिहास बहुत पुराना है। पहले किताबों, पुराणो, ग्रंथों आदि के उचित रख-रखाव के उद्देस्य से लकड़ी, पत्तों आदि द्वारा निर्मित साधारण आवरणों से ढका जाता था जिसमे संभवत: उस समय की कलाकारी, अलंकरणों, चित्रों, इत्यादि द्वारा सुसज्जित करके बनाने का चलन था। और आज भी क्रमश: यही विकास समय से साथ चलता आ रहा। संभवत: आवरण/मुख्य पृष्ठ, शुद्ध रंग, पोत, इत्यादि की द्वारा निर्मित कवर की तुलना में, छायाचित्र की सहायता के निर्मित कवर अत्याधिक प्रभावशाली व आकर्षक सिद्ध होते हैं।

मुख्य शब्द- आवरण, अभिकल्पना, डिज़ाइन, फोटोग्राफी, पोत, शीर्षक, मुख्य पृष्ठ, शुद्ध रंग।

प्रस्तावना- 'कला' स्वयं में एक पूर्ण भाषा होती है और फोटोग्राफी विधा ने भी 'कला' के सभी तत्वों एवं सिद्धान्तों का अनुप्रयोग किया जाता है।

"एक छायाचित्र के द्वारा हजारों शब्दों को बयां किया जा सकता है।"

कैमरा एक मशीन का कार्य करता है और वह केवल 'समय एवं प्रकाश' के आापसी तालमेल के द्वारा कलात्मक, भावात्मक एवं अभिव्यक्तिपरक कलाओं को जन्म देती है। किताब के आवरण, वेबसाइट के मुख्य पृष्ठ, समाचार पत्रों की आवरण या पत्रिका के आवरण की फोटो को उद्भाषित या चित्रित करने में विशेष योग्यता एवं अनुभव का होना आवश्यक होता है। जिसका सीधा प्रभाव आवरण पर पड़ता है। कवर पेज का लक्ष्य अधिक से अधिक उपभोक्ताओं व ग्राहकों को आकर्षित करना होता है।और विपणन संचार पद्धति व सिद्धान्तों जैसे कि; क्या?, कब?, क्यों?, कहाँ? और कैसे? (5W) के द्वारा आवरण को अत्याधिक प्रभावशाली व आकर्षक बनाया जा सकता है। कवर पेज साधारण, आकर्षक होना चाहिए।मांग एव आपूर्ति जैसी पद्धति को भी ध्यान में रखना चाहिए। जब दर्शक या पाठक पुस्तकालय या किताब घर में पहुँचता है तो सबसे पहले उसे आवरण ही आकर्षित और अवश्य ही छूने, देखने, पढने को मजबूर किया करती हैं। यदि नही खरीदते तो कम से

कम उसका मूल्य अवश्य ही पता करते हैं। जिसका सारा श्रेय आवरण के रचनात्मक छायाचित्र एवं डिजाइन को जाता है। हजारों शब्दों को एक सही एवं सटीक उद्भाषित छायाचित्र से व्यक्त किया करते है। लगभग कवर पेज का लक्ष्य अधिक से अधिक उपभोक्ताओं व ग्राहकों को आकर्षित करना होता है या संदेश पहुँचाना।

कवर पेज क्या है?- आवरण या मुख्य पृष्ठ, एक प्रकार से अपने आप में संपूर्ण होता है या अपने आप में संपूर्ण का सार समाहित किए होता है।आवरण या मुख्य पृष्ठ किताबों, समाचार पत्रों, पत्रिकाओं और वेबसाइट आदि के निहित समस्त मुख्य बिन्दुओं, विशेषताओं व सार को दर्शाया है। अर्थात् किताब के अन्दर के पन्नों में रचित, वर्णित, सृजित सम्पूर्ण को केवल आवरण को देखकर ही समझा जा सके और यही असली मायने में आवरण की भूमिका हुआ करती है। मतलब कवर पेज साधारण, संक्षिप्त, आकर्षक और उद्देश्य पूर्ण होना चाहिए जो कि एक नज़र में पाठक या दर्शक को समझा दें। कवर पेज का सिद्धान्त साधारण, आकर्षक एवं रंगों की अवधारणाओं से युक्त होना चाहिए। आवश्कयता (मांग) एवं आपूर्ति जैसी रणनीति को भी ध्यान में रखना चाहिए।

फोटोग्राफी क्या है?- प्रकाश के द्वारा खीचें गये ग्राफ को ही फोटोग्राफी की संज्ञा दी जाती है। फोटोग्राफी एक संपूर्ण कला है और साथ ही साथ विज्ञान भी। यह विधा कलात्मकता, वैज्ञानिकता एवं सैद्धान्तिक नियमों का अनुकरण किया आकृति है। कैमरा एक इलेक्ट्रानिक उपकरण या टूल्स मात्र होता है जिसके द्वारा हम अपनी अनुभूति को क़ैद कर चित्रों के रूप में व्यक्त करते हैं। फोटोग्राफी का सीधा सम्बन्ध प्रकाश (Light - VIBGYOR) से होता है। जिसकी सहायता से हम एक 'कहानी' या Frame को Design करते है। जिसमें एक कलाकार कलात्मक एवं वैज्ञानिक सिद्धान्तों के द्वारा भावों, भंगिमाओं, मुद्राओं, रसों, रंगों, पृष्ठभूमि एवं अन्य समस्त तत्वों को संयोजित या उद्भाषित करता है। हमारे मस्तिष्क या मनोभावों को व्यक्त करने मे कैमरा एक उपकरण मात्र होता है।

फोटोग्राफी प्रक्रिया को 3 भागों में बांटा जा सकता है–

1. पूर्वायोजना (Pre-Planning)
2. उद्भाषन (Exposure)
3. परिष्करण अथवा संपादन (Retouching)

फोटोग्राफी कल्पना, अभिव्यक्ति और भावनाओं का संयोजन है। (Photography is a combination of Imagination, expression & emotion.) आवरण के लिए फोटोग्राफी में कल्पना, अभिव्यक्ति और भावनाओं के संयोजन की अहम भूमिका होती है।

पूर्वायोजना (Pre-Planning)- इस चरण में हम अपने मस्तिष्क एवं मन के विचारों पर ध्यान देते हैं और एक उचित कार्यवाही की योजना तैयार करते है कि क्या? क्यों?, कब?, और कैसे? किसी विषय वस्तु को उद्भाषित करना है संयोजित करना है या डिज़ाइन करना है। अपने अनुभवों द्वारा उचित जगह, परिवेश, भेशभूषा, रंग विधान एवं अन्य कलात्मक पक्ष पर ध्यान केन्द्रित करके एक निश्चित दिशा एवं दशा का चयन करते हैं। जो हमारे आवरण को रुचिकर आकर्षक बनाने में योगदान करें।

उद्भाषन (Exposure)- इस चरण में पूर्व निर्णयों के आधार पर फोटोग्राफी को अंजाम देते हैं। उद्भाषन का तात्पर्य शटर स्पीड, I.S.O. और द्वारक से है। हम तीनों को आपसी तालमेल के द्वारा एक कलाकृति का सृजन करते हैं।

परिष्करण अथवा संपादन (Retouching or Editing)- इस चरण में हम खीचें गये चित्र/कलाकृति में आवश्यकता के अनुसार कुछ संभव सुधार करते हैं जैसे कटिंग, साइजिंग इत्यादि। जो आवरण को प्रभावशाली बनाने में सहायक सिद्ध हो और वह अपने उद्देश्य व लक्ष्य को प्राप्त कर सके।

कवर पेजों के प्रकार- यदि हम अपने चारों तरफ देखें तो पता चलता है कि हम लोग भी किसी आवरण या कवर से ढके हुए हैं जैसे शर्ट, पैंट, या अन्य वस्त्रों आदि से जो हमें धूल धूप इत्यादि से सुरक्षा प्रदान करते है और उस पर उकेरे चित्र आदि हमारी ख़ूबसूरती को दुगुना करते हैं। उसी प्रकार किताबें, न्यूजपेपर, पत्र-पत्रिकाएँ, उपन्यास, वेद, पुराण, ग्रंथ आदि सभी का अपना एक आवरण होता है जो उसकी सुरक्षा करता है, आकर्षक बनाता है, लेकिन उससे अलग नहीं रहता अर्थात् उसी का अभिन्न अंग/भाग होता है। प्रिंट एवं डिजीटल किताबें पत्रिकाएँ समाचार पत्र वेबसाइट, मोबाइल एप्लीकेशन इत्यादि आदि भी आवरण से निहित होते हैं।

किताबों के आवरण में फोटोग्राफी का महत्व- यदि हम किताब के इतिहास एवं उदय की ओर झांकें तो वह बहुत ही रोचक एवं पुराना है। लेकिन समय एवं विज्ञान में परस्पर नयापन आता गया जिससे साथ-साथ कलात्मक परिवर्तन भी देखने को मिलते हैं। पहले किताबें मोर पंख की कलम से ताड़ पत्र पर लिखी जाती थी और कवर के रूप में लकड़ी के फलकों का प्रयोग होता रहा। लेकिन धीरे-धीरे आज कागज और मशीनरी का आविष्कार देखने को मिल रहे है। जिसका पहले की तुलना में अत्यधिक महत्व है। किताब के आवरण में मुख्यत: उसका 'विषय' एवं उससे सम्बन्धित को चित्र की सहायता से डिजाइन किया जाता है पहले फोटोग्राफी का अभाव में चिन्हों प्रतीकों एवं रंगों का प्रयोग किया जा रहा है। वो आज के युग में कम पसन्द किया जाता है। इसीलिए फोटोग्राफी के द्वारा किताब के आवरण को अत्यधिक खूबसूरत और आकर्षक बनाया जा सकता है।

मैगज़ीन कवर में फ़ोटोग्राफ़ी का महत्व- मुख्य पत्रिकाएँ विभिन्न समय-काल के लिए प्रकाशित की जाती है
जैसे-

1. साप्ताहिक
2. मासिक
3. त्रैमासिक
4. छमाही/अर्द्धवार्षिक
5. वार्षिक

किसी भी पत्रिका का आवरण उसका अनुक्रमणिका जैसा होता है। जहाँ पर सम्पूर्ण विषयों, मुख्य बिन्दुओं को सरल एवं सटीक अर्थ में दर्शाया जाता है। जिसके लिए चिन्ह, लेखन, सुलेखन, रंग, रेखा व स्पेस आदि को लेकर संयोजन को दर्शाया जाता है।लेकिन फोटोग्राफी ने उपरोक्त तत्वों को हटाकर अपनी जगह पक्की कर ली है। जो भाव, रंग, आदि के साथ-साथ सौन्दर्य की पूर्ति करता है।

समाचार पत्र में फोटोग्राफी का महत्व- समाचार पत्र एक ऐसा माध्यम है जहाँ 'फोटोग्राफ' एक अहम भूमिका का निर्धारण किया करता है। फोटोग्राफी समाचार पत्रों में 'गागर में सागर' का रूपान्तरण करता है। अर्थात् अनेक शब्दों की जगह केवल एक सटीक फोटोग्राफी का प्रयोग किया जाय तो वह बात आसानी एवं कम वक्त में समझी जा सकती है।

वेबसाइट कवर पेज में फोटोग्राफी का महत्व- आज विज्ञान का युग है। डिजिटल का युग है। समस्त लोग अपने-अपने कामों में व्यस्त हैं। ऐसे में डिजिटलाइजेशन का अपना अहम रोल बन जाता है। वेबसाइट आज सभी के लिए एक प्रमुख संचार का

साधन है। इण्टरनेट के द्वारा वेबसाइट को कहीं से एवं कभी भी आसानी से देखा एवं समझा जा सकता है। वेबसाइट एक प्रकार से अनेक पेजों का संग्रह होता है। सभी पेज होम पेज/कवर पेज से लिंक या जुड़े हुए होते है जिससे इसके सभी पेजों को पढ़ा जा सकता है। इसलिए प्रतीकों, चिन्हों टाइप, के साथ फोटोग्राफ भी इसका अभिन्न अंग है। जिसके द्वारा सरलता से भावों या संदेशों को सम्प्रेषित किया जा सकता है।

अभिकल्पना (डिज़ाइन) के तत्व और सिद्धान्त- डिजाइन सिद्धान्त यह निर्धारित करते है कि एक प्रभावशाली सम्प्रेषण के लिए आलेखी डिजाइन किस प्रकार तैयार किया जाना चाहिए। ये सिद्धान्त डिजाइन के सभी तत्वों के संयोजन से सम्बन्धित होते हैं। रेखा, रंग, आकति या रूप, तान, पोत, अन्तराल आदि सभी तत्वों के द्वारा की ही किसी डिज़ाइन की कल्पना की जा सकती है।और सन्तुलन, अनुपात, एकता, विरोधाभास, लय या प्रवाह आदि प्रमुख सिद्धांतों के उचित प्रयोग व तारतम्यता द्वारा डिज़ाइन या आवरण को विशेष आकर्षक, सौंदर्यपूरक सृजित किया जाया जा सकता है।

फोटोग्राफी बनाम कवर पेज

1. केवल एक सही व सटीक फोटोग्राफी से 1000 शब्दों को हटाया जा सकता है।
2. फोटोग्राफी सभी दृश्यों, भावों, रंगों, संयोजन को अधिकतम सफलतापूर्वक व्यक्त करती है।
3. साधारण कलर और लिखावट से कवर कम आकर्षक होता है। जबकि फोटो के प्रयोग मात्र से ही वह अत्यधिक आकर्षक बन पड़ता है।
4. यह कवर पेज या आवरण की तारतम्यता का अत्याधिक सौन्दर्यपूरक स्वरूप प्रदान करता है।
5. यह साधारण और आकर्षक होता है।
6. आवरण अभिकल्पना (डिज़ाइन) में सही व सटीक फोटोग्राफ़्स का प्रयोग करने से वह अपने उद्देश्य की प्राप्ति में अधिक सफल सिद्ध होता है।

फोटोग्राफी का रहस्य- फोटोग्राफी विधा से बनायी गई कृति एक मानव की भाँति जीवित होती है। जिसमें आत्मा, हृदय, हाथ-पाव, आँखें आदि अंगों का समावेश प्रतीत होता है। जिनकी अपनी भाषा होती है। जो अपने सौंदर्य, आकर्षक और विषय-वस्तु के बल पर सभी के सम्मुख संवाद करने या संदेश पहुँचने में सक्षम हुआ करती है । फोटोग्राफी में नजर एवं नजरिया की खास भूमिका होती है। जो उसे आम से ख़ास बनाया करती है। कभी गुदगुदाती, कभी रुलाती, कभी आनन्द अनुभूति कराती है तो कभी यादों के रिमझिम बारिस, झरनों में भीगाती, नहलाती, बहा ले जाती तो कभी नीले आसमान की आभासी सैर करवाती ये फोटोग्राफी। मतलब बीते हुए समय को अपने में समेट कर भी बचाती है ये फोटोग्राफी।

निष्कर्ष- मैं तमाम खोजों एवं अनुभवों के अनुसार जहाँ तक समझ पाया कि आवरण की अपनी अनेक भूमिका होती है। विभिन्न प्रकार के आवरण, भिन्न-भिन्न माप व आकर, अनेक माध्यम होने के बावजूद भी वे अपने कर्तव्य को भलीभाँति प्रेषित करते हैं। किसी किताब, पत्रिका, समाचार पत्र आदि का आवरण मात्र सुरक्षा कवच ही नहीं होता है वरन् यह उसकी 'आत्मा' स्वरूप होता है। जिसमें टाइपोग्राफी, संयोजन, रंगविधान, कला सिद्धान्त, इतिहास एवं अन्य सभी इसके अभिन्न अंग हैं और सबसे महत्व पूर्ण अंग है 'फोटोग्राफी' या चित्र जो सोने में सुहागा' और 'गागर में सागर' आदि उपमाओं पर खरा साबित होता है। 'कल्पना' बहुत ही उपयोगी एवं कारगर युक्ति है। जिसके द्वारा नित्य एवं सदैव नवीनता का आभास व दर्शन किया जा सकता है। आवरण की संरचना एवं उसके निर्माण में प्रयुक्त सभी क्रियाविधियों एवं कलात्मक सिद्धान्तों का प्रमुख योगदान होता है। यही कारण है कि लोक कला, दृश्य कला, मंच कला, विज्ञान, गणित, मनोविज्ञान विज्ञापन, एवं अन्य सभी के प्रतीक, लेखन एवं विधान, संयोजन एक दूसरे से अलग पहचान दिलाते है।

संदर्भ:-

1. https://en-m-wikipedia-org.translate.goog/wiki/Bookdesign?xtrsl=en&xtrtl=hi&xtrhl=hi&xtrpto=tc
2. https://en.wikipedia.org/wiki/Photography
3. Advertising Principle & its Technique – Narendra Singh Yadav
4. Photography Techniques & its Principles – N. S. Yadav
5. Graphic Design – N. S. Yadav
6. Indian Advertising – Arun Chaudhari
7. Marketing Management by Philip Kotler – 15th Edition
8. आधुनिक युग में विज्ञापन निर्माण प्रक्रिया, सुषमा देवी, International Journal of Advanced Research and Development, ISSN: 2455-4030, Vol. 2; Issue 5; September 2017; Page No. 847-851